

वैश्विक राजनीति में हिन्दी की भूमिका : सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति का विश्लेषण

मौ० सुलेमान

असिस्टेंट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

गुलाब सिंह हिंदू (पी०जी०) कॉलेज चांदपुर - स्याऊ (बिजनौर), गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय मुरादाबाद,
ईमेल-suleman.rza15@gmail.com मो. 8510889925

सार (Abstract)

इक्कीसवीं सदी की वैश्विक राजनीति में शक्ति की अवधारणा केवल सैन्य और आर्थिक सामर्थ्य तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि संस्कृति, भाषा, विचार और मूल्य भी अंतरराष्ट्रीय प्रभाव के महत्वपूर्ण स्रोत बन चुके हैं। इसी संदर्भ में 'सॉफ्ट पावर' की अवधारणा विशेष महत्त्व रखती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिन्दी भाषा की भूमिका का विश्लेषण एक सांस्कृतिक एवं भाषायी सॉफ्ट पावर के रूप में किया गया है। यह अध्ययन यह तर्क प्रस्तुत करता है कि हिन्दी केवल भारत की आंतरिक संपर्क भाषा नहीं है, बल्कि प्रवासी समुदाय, सांस्कृतिक कूटनीति, मीडिया, सिनेमा और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से भारत की वैश्विक छवि निर्माण में एक प्रभावी उपकरण बनती जा रही है। शोध-पत्र में यह भी विवेचना की गई है कि वैश्विक राजनीति में हिन्दी की संभावनाओं के साथ-साथ कौन-सी संरचनात्मक, कूटनीतिक और नीतिगत चुनौतियाँ विद्यमान हैं, तथा उन्हें कैसे संबोधित किया जा सकता है।

कंजी शब्द (Keywords): हिन्दी, सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक कूटनीति, वैश्विक राजनीति, भाषा-राजनीति, भारतीय विदेश नीति।

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा केवल विचारों के संप्रेषण का साधन मात्र नहीं होती है, बल्कि वह संस्कृति, सामाजिक पहचान, ऐतिहासिक स्मृति और राजनीतिक सत्ता की वाहक भी होती है। भाषाएँ किसी समाज की विश्व-दृष्टि (Worldview) को प्रतिबिंबित करती हैं और समय के साथ वे शक्ति-संरचनाओं से गहराई से जुड़ जाती हैं। इसी कारण वैश्विक राजनीति में भाषा को तटस्थ माध्यम नहीं, बल्कि प्रभाव, प्रभुत्व और वैचारिक नियंत्रण के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखा जाता है। इतिहास साक्षी है कि लैटिन, फ्रेंच और अंग्रेजी जैसी भाषाओं ने अपने-अपने युगों में वैश्विक राजनीति, कूटनीति और ज्ञान-उत्पादन पर प्रभुत्व स्थापित किया है। औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी भाषा का प्रसार केवल प्रशासनिक सुविधा का परिणाम नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक वर्चस्व और वैचारिक आधिपत्य (Cultural Hegemony) की एक सुसंगठित प्रक्रिया का हिस्सा था। उपनिवेशवाद के औपचारिक अंत के पश्चात भी अंग्रेजी का वैश्विक वर्चस्व बना रहा, जिससे अंतरराष्ट्रीय राजनीति, शिक्षा, मीडिया और वैश्विक शासन संस्थानों में भाषायी असमानता की स्थिति उत्पन्न हुई। इक्कीसवीं सदी में जब वैश्विक राजनीति बहुध्रुवीय (Multipolar) संरचना की ओर अग्रसर है, तब शक्ति की अवधारणा भी पुनर्परिभाषित हो रही है। सैन्य और आर्थिक सामर्थ्य के साथ-साथ संस्कृति, विचार, मूल्य और भाषा अब अंतरराष्ट्रीय प्रभाव के महत्वपूर्ण स्रोत बन चुके हैं। इसी संदर्भ में 'सॉफ्ट पावर' की अवधारणा विशेष महत्त्व रखती है, जिसमें भाषा को सांस्कृतिक आकर्षण और संवाद के एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखा जा सकता है।

भारत, एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में, न केवल अपनी आर्थिक एवं राजनीतिक क्षमताओं के कारण, बल्कि अपनी सभ्यतागत विरासत, सांस्कृतिक विविधता और भाषायी समृद्धि के कारण भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। ऐसे में हिन्दी भाषा की भूमिका पर पुनर्विचार आवश्यक हो जाता है, जो करोड़ों लोगों की मातृभाषा होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, साहित्य और

सामाजिक चेतना की वाहक है। प्रश्न यह है कि क्या हिन्दी को केवल राष्ट्रीय संपर्क भाषा तक सीमित रखा जाए, अथवा उसे भारत की वैश्विक सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर का एक सक्रिय उपकरण बनाया जा सकता है? इन्हीं प्रश्नों को केंद्र में रखते हुए प्रस्तुत शोध-पत्र वैश्विक राजनीति में हिन्दी की भूमिका का विश्लेषण करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार हिन्दी भाषा भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि निर्माण, सांस्कृतिक संवाद और वैचारिक प्रभाव विस्तार में योगदान दे सकती है।

2. सैद्धांतिक ढांचा : सॉफ्ट पावर और भाषा-राजनीति

2.1 सॉफ्ट पावर की अवधारणा: अंतरराष्ट्रीय संबंधों के परंपरागत अध्ययन में शक्ति (Power) को प्रायः सैन्य क्षमता, आर्थिक संसाधनों और भौतिक बल के संदर्भ में समझा गया है। परंतु शीत युद्ध के पश्चात वैश्विक राजनीति में आए संरचनात्मक परिवर्तनों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल हार्ड पावर अर्थात् सैन्य क्षमता, आर्थिक संसाधनों और भौतिक बल के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय प्रभाव बनाए रखना न तो पर्याप्त है और न ही टिकाऊ। इसी पृष्ठभूमि में अमेरिकी विद्वान जोसेफ नाई (Joseph Nye) ने सॉफ्ट पावर (Soft Power) की अवधारणा प्रस्तुत की है। जोसेफ नाई के अनुसार "Soft power is the ability to get what you want through attraction rather than coercion or payment." अर्थात् सॉफ्ट पावर वह क्षमता है जिसके माध्यम से कोई राज्य दूसरों को आकर्षित कर, उनके विचारों और प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकता है बिना बल प्रयोग या आर्थिक दबाव के। जोसेफ नाई के अनुसार सॉफ्ट पावर के तीन प्रमुख स्रोत होते हैं—1. संस्कृति (Culture) 2. राजनीतिक मूल्य (Political Values) 3. विदेश नीति की वैधता और नैतिकता (Foreign Policy Legitimacy) भाषा इन तीनों स्रोतों को जोड़ने वाला केंद्रीय माध्यम है, क्योंकि संस्कृति का संप्रेषण, मूल्यों की अभिव्यक्ति और नीतियों का औचित्य भाषिक माध्यम से ही संभव होता है।

उदाहरण के लिए अमेरिकी सैन्य हस्तक्षेप जहाँ कई बार प्रतिरोध उत्पन्न करता है, वहीं हॉलीवुड, अंग्रेजी भाषा और अमेरिकी जीवन-शैली विश्व भर में अमेरिकी प्रभाव को स्वाभाविक रूप से स्थापित करती है। इसी प्रकार, फ्रांस का 'फ्रेंच इंस्टीट्यूट' या चीन का 'कन्फ्यूशियस इंस्टीट्यूट' भाषा के माध्यम से सॉफ्ट पावर का विस्तार करते हैं। इस संदर्भ में हिन्दी को भारत की सॉफ्ट पावर के एक संभावित स्रोत के रूप में देखा जा सकता है, जो सांस्कृतिक आकर्षण और भावनात्मक जुड़ाव के माध्यम से भारत की वैश्विक उपस्थिति को सुदृढ़ कर सकती है।

2.2 भाषा और सत्ता

(क) भाषा-राजनीति (Language Politics): भाषा कभी भी एक तटस्थ उपकरण नहीं होती है। वह सत्ता-संबंधों, सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक प्राथमिकताओं से गहराई से जुड़ी होती है। भाषा-राजनीति का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से कुछ भाषाएँ प्रभुत्व प्राप्त करती हैं, जबकि अन्य हाशिए पर चली जाती हैं। वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व केवल संचार की सुविधा का परिणाम नहीं है, बल्कि यह औपनिवेशिक विरासत, आर्थिक शक्ति और वैश्विक संस्थागत संरचना से जुड़ा हुआ है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मीडिया और वैश्विक अकादमिक जगत में अंग्रेजी की प्रधानता भाषायी

असमानता को जन्म देती है। भारत के संदर्भ में भी भाषा-राजनीति आंतरिक और बाह्य दोनों स्तरों पर प्रभावी रही है। हिन्दी और अंग्रेजी के बीच संबंध, औपनिवेशिक अतीत और आधुनिक वैश्वीकरण की जटिलताओं को दर्शाता है।

(ख) सांस्कृतिक आधिपत्य : इटालियन विचारक एंतोनियो ग्राम्शी (Antonio Gramsci) ने 'सांस्कृतिक आधिपत्य (Cultural Hegemony)' की अवधारणा के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि सत्ता केवल बल प्रयोग से नहीं, बल्कि विचारों, संस्कृति और भाषा के माध्यम से भी स्थापित होती है। उनके अनुसार, शासक वर्ग अपने विचारों को 'सामान्य' और 'स्वाभाविक' के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे अधीन वर्ग स्वयं उस व्यवस्था को स्वीकार कर लेता है। भाषा इस सांस्कृतिक आधिपत्य का एक प्रमुख उपकरण है। अंग्रेजी भाषा को 'वैश्विक सफलता की भाषा' के रूप में प्रस्तुत किया जाना इसी प्रक्रिया का उदाहरण है। इसके परिणामस्वरूप अन्य भाषाएँ जैसे हिन्दी वैश्विक विमर्श में द्वितीयक स्थान पर चली जाती हैं।

(ग) वैचारिक वर्चस्व और संप्रेषण: जर्मन दार्शनिक, समाजशास्त्री एवं फ्रैंकफर्ट स्कूल (Frankfurt School) के प्रमुख विचारक जर्गेन हैबरमास (Jürgen Habermas) के संप्रेषणात्मक क्रिया सिद्धांत (Theory of Communicative Action) के अनुसार, भाषा सार्वजनिक विमर्श (Public Sphere) के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाती है। जो भाषा इस विमर्श पर नियंत्रण रखती है, वही वैचारिक दिशा भी तय करती है। डिजिटल युग में यह प्रक्रिया और भी तीव्र हो गई है। सोशल मीडिया, समाचार चैनल और डिजिटल प्लेटफॉर्म भाषा के माध्यम से राजनीतिक नैरेटिव गढ़ते हैं। हिन्दी का इन मंचों पर बढ़ता प्रयोग भारत के लिए वैचारिक उपस्थिति सुदृढ़ करने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार सॉफ्ट पावर और भाषा-राजनीति का यह सैद्धांतिक ढांचा यह स्पष्ट करता है कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि सत्ता, प्रभाव और वैचारिक प्रभुत्व का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी है। हिन्दी, यदि सुनियोजित नीति के अंतर्गत प्रयोग की जाए, तो वह भारत की सॉफ्ट पावर को वैश्विक राजनीति में सुदृढ़ करने की क्षमता रखती है।

3. हिन्दी एक सांस्कृतिक एवं भाषायी सॉफ्ट पावर के रूप में

3.1 हिन्दी की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक भूमिका: हिन्दी का विकास केवल भाषिक विकास नहीं रहा है, बल्कि यह भारतीय समाज के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों से गहराई से जुड़ा रहा है। संस्कृत की ज्ञान-परंपरा, प्राकृत-अपभ्रंश की लोकधारों और मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के समन्वय से विकसित हिन्दी ने जनसामान्य की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम प्रदान किया है। भक्ति आंदोलन के दौरान कबीर, तुलसीदास, सरदास, रसखान और मीरा जैसे संत-कवियों ने हिन्दी को आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना की भाषा बनाया। यह भाषा सत्ता की नहीं, बल्कि लोक की भाषा बनी जिसने सामाजिक समरसता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को व्यापक स्तर पर प्रसारित किया है। यही विशेषता हिन्दी को सांस्कृतिक सॉफ्ट पावर के रूप में सक्षम बनाती है, क्योंकि सॉफ्ट पावर का आधार ही जन-स्वीकृति और भावनात्मक जुड़ाव होता है। औपनिवेशिक काल में हिन्दी ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने हिन्दी को सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय एकता और औपनिवेशिक प्रतिरोध का माध्यम बनाया है। इस प्रकार हिन्दी ने न केवल सांस्कृतिक बल्कि राजनीतिक चेतना को भी आकार प्रदान किया है।

3.2 साहित्य, दर्शन और लोक परंपरा में हिन्दी: हिन्दी साहित्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि वह भारतीय दर्शन, नैतिक चिंतन और सामाजिक यथार्थ का वाहक रहा है। उपनिषदों और गीता जैसे दार्शनिक ग्रंथों के हिन्दी रूपांतरणों ने जटिल दार्शनिक अवधारणाओं को जनसामान्य तक पहुंचाने का कार्य किया है। यह प्रक्रिया ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का उदाहरण है, जो किसी भी भाषा को सॉफ्ट पावर बनाती है। आधुनिक हिन्दी साहित्य विशेषतः

प्रेमचंद, अज्ञेय, मुक्तिबोध और नागार्जुन ने सामाजिक न्याय, वर्ग-संघर्ष और सत्ता-संबंधों पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत किया है। यह साहित्य वैश्विक साहित्यिक प्रवृत्तियों के समकक्ष खड़ा दिखाई देता है और भारत को एक वैचारिक रूप से समृद्ध राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

लोक परंपरा के स्तर पर हिन्दी लोकगीत, लोककथा, रामलीला, नौटंकी और काव्य-गायन के माध्यम से सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखती है। प्रवासी भारतीय समुदायों में यही लोक परंपराएँ हिन्दी को भावनात्मक संपर्क-सत्र के रूप में बनाए रखती हैं। मॉरीशस, फीजी और सूरीनाम जैसे देशों में हिन्दी लोक-संस्कृति भारत की सांस्कृतिक उपस्थिति का अप्रत्यक्ष विस्तार कर रही है।

3.3 हिन्दी और भारतीय सभ्यतागत पहचान: भारतीय सभ्यता की मूल विशेषता उसकी बहुलता, सहिष्णुता और संवादशीलता रही है। हिन्दी, अपने विविध रूपों अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मगही, छत्तीसगढ़ी आदि के माध्यम से इस सभ्यतागत बहुलता को अभिव्यक्त करती है। यह भाषा किसी एक क्षेत्र या वर्ग की नहीं, बल्कि एक साझा सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विकसित हुई है। सभ्यतागत पहचान के निर्माण में भाषा का विशेष स्थान होता है। जिस प्रकार फ्रेंच भाषा फ्रांस की सभ्यता का प्रतीक मानी जाती है और चीनी भाषा चीन की सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाती है, उसी प्रकार हिन्दी भारत की सभ्यतागत निरंतरता और सांस्कृतिक आत्मा की प्रतिनिधि बन सकती है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जब भारतीय नेता हिन्दी में संबोधन करते हैं, तो वह केवल भाषिक चयन नहीं होता है, बल्कि एक सभ्यतागत संदेश भी होता है कि भारत अपनी सांस्कृतिक जड़ों के साथ वैश्विक संवाद में सहभागी है। यह सांस्कृतिक आत्मविश्वास भारत की सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि हिन्दी अपनी ऐतिहासिक निरंतरता, साहित्यिक, दार्शनिक समृद्धि और लोक-सांस्कृतिक आधार के कारण एक प्रभावी सांस्कृतिक एवं भाषायी सॉफ्ट पावर बनने की पूर्ण क्षमता रखती है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हिन्दी को भावनात्मक गर्व से आगे बढ़ाकर एक रणनीतिक सांस्कृतिक संसाधन के रूप में देखा जाए।

4. हिन्दी और भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति

4.1 विदेश नीति में सांस्कृतिक आयाम : सांस्कृतिक कूटनीति का तात्पर्य किसी राष्ट्र द्वारा अपनी संस्कृति, भाषा, मूल्यों और जीवन-दृष्टि के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय समुदाय में सकारात्मक छवि निर्माण से है। भारत की विदेश नीति के सांस्कृतिक आयाम की जड़ें उसकी सभ्यतागत निरंतरता में निहित हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसी अवधारणाएँ, सहिष्णुता और संवाद की परंपरा, भारत को सांस्कृतिक कूटनीति के लिए स्वाभाविक आधार प्रदान करती हैं। इस संदर्भ में हिन्दी जो भारतीय संस्कृति, साहित्य और दर्शन की वाहक भाषा है। विदेश नीति के सांस्कृतिक आयाम को सशक्त बनाने का एक केंद्रीय माध्यम बन सकती है। यह भी उल्लेखनीय है कि सांस्कृतिक कूटनीति, हार्ड पावर की तुलना में कम टकरावपूर्ण और अधिक टिकाऊ प्रभाव उत्पन्न करती है। भाषा के माध्यम से स्थापित संवाद भावनात्मक जुड़ाव पैदा करता है, जो राजनीतिक सहयोग और रणनीतिक साझेदारी के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करता है।

4.2 हिन्दी के माध्यम से सांस्कृतिक संवाद

(क) योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन: योग और आयुर्वेद आज वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान के प्रमुख प्रतीक बन चुके हैं। योग के अंतरराष्ट्रीयकरण विशेषतः अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) ने भारतीय जीवन-दर्शन को वैश्विक विमर्श का हिस्सा बनाया है। योग-साहित्य, मंत्रोच्चार, दर्शन और अभ्यास-पद्धतियों में हिन्दी का प्रयोग इस संवाद को अधिक प्रामाणिक और भावनात्मक बनाता है। इसी प्रकार आयुर्वेदिक ज्ञान, जब हिन्दी के माध्यम से प्रस्तुत होता है, तो वह केवल चिकित्सा-पद्धति नहीं, बल्कि भारत की समग्र जीवन-दृष्टि को संप्रेषित करता है। भारतीय दर्शन कर्म, धर्म, मोक्ष और अहिंसा जैसी अवधारणाएँ हिन्दी के माध्यम से वैश्विक श्रोताओं तक पहुंचकर

भारत की बौद्धिक सॉफ्ट पावर को विस्तार देती हैं।

(ख) विश्व हिन्दी सम्मेलन : विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी को वैश्विक मंच प्रदान करने का एक महत्त्वपूर्ण संस्थागत प्रयास रहा है। यह सम्मेलन केवल भाषा-विकास तक सीमित न रहकर, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) का एक प्रभावी उपकरण बनकर उभरा है। वर्ष 1975 से 2023 तक आयोजित कुल 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी को एक राष्ट्रीय भाषा से आगे बढ़ाकर वैश्विक सांस्कृतिक, बौद्धिक और कूटनीतिक भाषा के रूप में स्थापित करने की निरंतर यात्रा को अभिव्यक्त करते हैं। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन (1975, नागपुर) ने हिन्दी को पहली बार संगठित रूप से अंतरराष्ट्रीय विमर्श का विषय बनाया। इसी क्रम में ग्यारहवाँ सम्मेलन (2018, पोर्ट लुईस, मॉरीशस) इस तथ्य का पुनः प्रमाण बना कि हिन्दी प्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक स्मृति और भारत की सॉफ्ट पावर का प्रभावी माध्यम है। इस क्रम की परिणति बारहवें सम्मेलन (2023, फिजी) में हुई, जहाँ अनेक देशों की भागीदारी, फिजी के शीर्ष नेतृत्व की उपस्थिति तथा भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व एस. जयशंकर द्वारा किया जाना हिन्दी की वैश्विक स्वीकार्यता और सांस्कृतिक कूटनीति के सशक्त रूप को रेखांकित करता है। इन सम्मेलनों के समग्र प्रभाव से हिन्दी को वैश्विक सांस्कृतिक संवाद की भाषा के रूप में वैधता प्राप्त हुई। इस प्रकार विश्व हिन्दी सम्मेलन केवल साहित्यिक आयोजन नहीं है, बल्कि भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण घटक बनकर उभरे हैं।

(ग) भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और प्रवासी सांस्कृतिक मंच: भारत सरकार के अंतर्गत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (Indian Council for Cultural Relations) भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति का प्रमुख संस्थागत आधार है। इस परिषद के माध्यम से विदेशों में हिन्दी शिक्षण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक गोष्ठियाँ और कलाकारों का आदान-प्रदान किया जाता है। ये गतिविधियाँ हिन्दी को भारत की सॉफ्ट पावर का एक संगठित उपकरण बनाती हैं। प्रवासी भारतीय समुदाय विशेषकर मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद-टोबैगो और गयाना जैसे देशों में हिन्दी सांस्कृतिक स्मृति और पहचान का केंद्र बनी हुई है। प्रवासी सांस्कृतिक मंचों पर हिन्दी भाषा भारत और प्रवासी समाज के बीच सेतु का कार्य करती है, जिससे भारत के प्रति भावनात्मक और राजनीतिक जुड़ाव सुदृढ़ होता है। यह जुड़ाव भारत की विदेश नीति के लिए अप्रत्यक्ष लेकिन प्रभावी समर्थन का आधार बनता है। इस प्रकार हिन्दी, भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति का केवल सहायक तत्व नहीं, बल्कि उसका मौलिक आधार बन सकती है।

5. प्रवासी भारतीय समुदाय, वैश्विक दक्षिण और हिन्दी

5.1 गिरमिटिया देशों में हिन्दी : उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारत से बड़ी संख्या में श्रमिकों को गिरमिट प्रथा के तहत विभिन्न उपनिवेशों में ले जाया गया। जहाँ इन श्रमिकों के साथ केवल श्रमशक्ति ही नहीं, बल्कि उनकी भाषा, संस्कृति, लोक-परंपरा और धार्मिक विश्वास भी वहाँ पहुँचे। हिन्दी विशेषकर अवधी, भोजपुरी और ब्रज इन प्रवासी समुदायों की सांस्कृतिक पहचान की आधारशिला बनी। मॉरीशस, फीजी और सूरीनाम जैसे देशों में हिन्दी केवल एक घरेलू भाषा नहीं रही, बल्कि यह सांस्कृतिक स्मृति और सामुदायिक एकता का माध्यम भी बनी। मॉरीशस में हिन्दी को शैक्षणिक पाठ्यक्रम, मीडिया और सांस्कृतिक आयोजनों में संस्थागत मान्यता प्राप्त हुई है। फीजी और सूरीनाम में भी रामायण पाठ, लोकगीत, कथा-वाचन और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से हिन्दी पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रही। इन देशों में हिन्दी की उपस्थिति ने भारत के साथ एक भावनात्मक सभ्यतागत सेतु निर्मित किया है, जो औपचारिक कूटनीति से कहीं अधिक गहरा और टिकाऊ सिद्ध हुआ।

5.2 प्रवासी राजनीति और सांस्कृतिक पहचान

(क) प्रवासी राजनीति (Diaspora Politics): आधुनिक राजनीति विज्ञान में प्रवासी राजनीति (Diaspora Politics) उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है, जिसके अंतर्गत प्रवासी समुदाय अपनी मूल भूमि और निवास-देश दोनों की राजनीति को प्रभावित करते हैं।

भाषा इस राजनीति का केंद्रीय उपकरण होती है, क्योंकि वही सामूहिक पहचान, स्मृति और एकजुटता को बनाए रखती है। हिन्दी, प्रवासी भारतीय समुदाय के लिए केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक चेतना का आधार बनी। मॉरीशस जैसे देशों में हिन्दी भाषी समुदाय ने राजनीतिक नेतृत्व, नीति-निर्माण और भारत-मॉरीशस संबंधों में सक्रिय भूमिका निभाई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा, प्रवासी राजनीति में नरम प्रभाव (Soft Influence) का कार्य करती है।

(ख) भावनात्मक और राजनीतिक जुड़ाव: हिन्दी भाषा प्रवासी समुदाय में भारत के प्रति एक भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखने में मदद करती है, जो समय के साथ राजनीतिक समर्थन में रूपांतरित हो सकता है। भारत द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम, विश्व हिन्दी सम्मेलन, और प्रवासी भारतीय दिवस जैसे आयोजन इस जुड़ाव को और सुदृढ़ करते हैं। यह भावनात्मक संबंध भारत की विदेश नीति के लिए अप्रत्यक्ष किंतु प्रभावी संसाधन के रूप में देखे जा सकते हैं। जब प्रवासी समुदाय भारत की सांस्कृतिक पहचान से स्वयं को जोड़कर देखते हैं, तो वे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के हितों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख अपनाते हैं।

5.3 वैश्विक दक्षिण (Global South) में हिन्दी की संभावनाः

वैश्विक दक्षिण (Global South) के देशों ने औपनिवेशिक शोषण, सांस्कृतिक वर्चस्व और भाषायी असमानता का साझा अनुभव किया है। इस संदर्भ में हिन्दी जैसी भाषा जो स्वयं औपनिवेशिक अनुभव और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रतीक रही है एक वैकल्पिक सांस्कृतिक विमर्श प्रस्तुत कर सकती है। अंग्रेजी के वैश्विक वर्चस्व के विपरीत, हिन्दी समानता, सामूहिकता और सांस्कृतिक संवाद पर आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह भाषा ज्ञान-उत्पादन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैचारिक सहयोग के क्षेत्र में वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए एक प्रति-आधिपत्यवादी (Counter-hegemonic) माध्यम बन सकती है। भारत यदि दक्षिण-दक्षिण सहयोग (South-South Co-operation) के ढाँचे में हिन्दी को सांस्कृतिक संवाद की भाषा के रूप में विकसित करता है, तो यह न केवल भारत की सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करेगा, बल्कि वैश्विक राजनीति में भाषायी न्याय और बहुलतावाद को भी बढ़ावा देगा।

6. वैश्विक मीडिया, सिनेमा और डिजिटल प्लेटफॉर्म में हिन्दी

6.1 हिन्दी सिनेमा और वैश्विक दर्शकः हिन्दी सिनेमा (विशेषतः बॉलीवुड) आज भारत की सॉफ्ट पावर का सबसे दृश्य और प्रभावशाली

माध्यम बन चुका है। यह केवल मनोरंजन उद्योग नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व (cultural representation) और राष्ट्रीय छवि निर्माण का एक सशक्त उपकरण है। हिन्दी सिनेमा के माध्यम से भारतीय समाज, पारिवारिक मूल्यों, भावनात्मक संरचनाओं और नैतिक दृष्टिकोण को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया गया है। रूस, मध्य एशिया, पश्चिम एशिया, अफ्रीका और दक्षिण एशिया के अनेक देशों में हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता यह दर्शाती है कि भाषा की सीमाएँ भावनात्मक संप्रेषण में बाधा नहीं बनती हैं। 'राज कपूर' की फिल्मों से लेकर आधुनिक सिनेमा तक, हिन्दी फिल्मों ने भारत को एक सांस्कृतिक रूप से जीवंत और मानवीय समाज के रूप में प्रस्तुत किया है। यह प्रस्तुति भारत के प्रति सहानुभूति और आकर्षण उत्पन्न करती है, जो सॉफ्ट पावर का मूल आधार है। इसके अतिरिक्त, ओटीटी प्लेटफॉर्मों के उदय ने हिन्दी सिनेमा और वेब-सीरीज को वैश्विक दर्शकों तक सीधे पहुँच प्रदान की है। इससे भारत के सामाजिक-राजनीतिक विमर्श, ऐतिहासिक कथाएँ और समकालीन यथार्थ अंतरराष्ट्रीय पब्लिक स्फियर में स्थान बना रहे हैं।

6.2 सोशल मीडिया और डिजिटल पब्लिक स्फियर: डिजिटल क्रांति के साथ वैश्विक राजनीति में डिजिटल पब्लिक स्फियर (Digital Public Sphere) का उदय हुआ है, जहाँ विचार, विमर्श और राजनीतिक नैरेटिव पारंपरिक मीडिया से बाहर निकलकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर निर्मित होते हैं।

हिन्दी की उपस्थिति इस डिजिटल पब्लिक स्फियर में निरंतर बढ़ रही है। यूट्यूब, एक्स (पूर्व ट्विटर), फेसबुक, इंस्टाग्राम और ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्मों पर हिन्दी में होने वाला विमर्श अब केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है। प्रवासी भारतीय समुदाय, विदेशी शोधार्थी और बहुभाषिक दर्शक भी इस विमर्श का हिस्सा बन रहे हैं। इससे हिन्दी एक ट्रांसनेशनल डिजिटल भाषा के रूप में उभर रही है। राजनीतिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है क्योंकि डिजिटल प्लेटफॉर्म सरकारों, राजनीतिक नेताओं और सामाजिक आंदोलनों को सीधे जनसंवाद का अवसर प्रदान करते हैं। हिन्दी के माध्यम से प्रस्तुत विचार अधिक व्यापक और समावेशी पहुँच रखते हैं, जिससे लोकतांत्रिक संवाद को बल मिलता है।

6.3 राजनीतिक नैरेटिव और छवि निर्माण: वैश्विक राजनीति में राष्ट्रों की छवि केवल कूटनीतिक वक्तव्यों से नहीं बनती है, बल्कि मीडिया, सिनेमा और डिजिटल नैरेटिव के माध्यम से निर्मित होती है। हिन्दी भाषा इस नैरेटिव निर्माण में एक प्रभावी भूमिका निभा रही है। हिन्दी में प्रस्तुत भाषण, वृत्तचित्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम और डिजिटल सामग्री भारत को एक सभ्यतागत, लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक रूप से आत्मविश्वासी राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह नैरेटिव वैश्विक जनमत को प्रभावित करता है और भारत की विदेश नीति के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करता है। साथ ही, यह भी उल्लेखनीय है कि डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर नैरेटिव निर्माण प्रतिस्पर्धात्मक भी है। ऐसे में हिन्दी का रणनीतिक और संतुलित प्रयोग भारत को अपनी बात वैश्विक मंच पर अधिक प्रभावी ढंग से रखने में सहायक हो सकता है। डिजिटल युग में हिन्दी की यह भूमिका भारत की सॉफ्ट पावर को नए आयाम प्रदान करती है और वैश्विक राजनीति में उसकी सांस्कृतिक उपस्थिति को सुदृढ़ करती है।

7. वैश्विक राजनीति में हिन्दी : चुनौतियाँ और सीमाएँ
वैश्विक राजनीति में हिन्दी की भूमिका को समझने के लिए केवल संभावनाओं पर चर्चा पर्याप्त नहीं है; उसके समक्ष विद्यमान वास्तविक, व्यावहारिक और संरचनात्मक चुनौतियों का विश्लेषण भी आवश्यक है। हिन्दी की वैश्विक उपस्थिति को सीमित करने वाले कारक ऐतिहासिक, संस्थागत और नीतिगत तीनों स्तरों पर देखे जा सकते हैं।

7.1 अंग्रेजी का भाषायी वर्चस्व : अंग्रेजी का वैश्विक प्रभुत्व केवल सांस्कृतिक नहीं है, बल्कि संस्थागत और व्यावहारिक स्तर पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उदाहरणस्वरूप—संयुक्त राष्ट्र में यद्यपि बहुभाषिकता का सिद्धांत स्वीकार किया गया है, परंतु वास्तविक कार्यवाही, मसौदा-निर्माण और अनौपचारिक वार्ताएँ प्रायः अंग्रेजी में ही होती हैं। अंतरराष्ट्रीय अकादमिक प्रकाशनों, जर्नलों और वैश्विक रैंकिंग प्रणालियों में अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दी जाती है, जिसके कारण हिन्दी में होने वाला गंभीर अकादमिक कार्य वैश्विक विमर्श से बाहर रह जाता है। वैश्विक मीडिया जैसे— CNN, BBC, Reuters आदि अधिकतर अंग्रेजी केंद्रित नैरेटिव प्रस्तुत करते हैं, जिससे हिन्दी या अन्य भाषाओं में निर्मित दृष्टिकोण वैश्विक जनमत तक नहीं पहुँच पाता है।

7.2 वैश्विक संस्थानों में भाषायी असमानता : वैश्विक संस्थानों में भाषायी असमानता हिन्दी की सीमाओं को और स्पष्ट करती है जैसे— विश्व व्यापार संगठन और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं की आधिकारिक कार्यकारी भाषाओं में हिन्दी का स्थान नहीं है, जबकि हिन्दी बोलने वालों की संख्या कई आधिकारिक भाषाओं से अधिक है। संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में हिन्दी के न होने के कारण भारत को अपने वक्तव्य, प्रस्ताव और दस्तावेज अंग्रेजी में प्रस्तुत करने पड़ते हैं, जिससे भाषायी आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति सीमित हो जाती है। यह स्थिति भाषायी न्याय (Linguistic Justice) के सिद्धांत पर गंभीर प्रश्न खड़े करती है।

7.3 भारत की आंतरिक भाषा-राजनीति : हिन्दी की वैश्विक भूमिका को भारत की आंतरिक भाषा-राजनीति से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। व्यवहार में दक्षिण और पूर्वोत्तर भारत के कई राज्यों में हिन्दी को बढ़ावा देने की नीतियों को कभी-कभी भाषायी वर्चस्व के रूप में देखा जाता है। इस आंतरिक असहमति का प्रभाव भारत की सांस्कृतिक

कूटनीति पर भी पड़ता है, क्योंकि वैश्विक मंच पर प्रस्तुत भाषा-नीति तभी प्रभावी होती है जब उसे घरेलू स्तर पर व्यापक स्वीकृति प्राप्त हो। उदाहरण के लिए, जब भारत हिन्दी को वैश्विक मंचों पर आगे बढ़ाने की बात करता है, तो आलोचक इसे आंतरिक बहुभाषिकता के साथ असंतुलन के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे भारत की सांस्कृतिक नीति को वैचारिक चुनौती मिलती है।

7.4 नीति-स्तर पर समन्वय का अभाव : हिन्दी के वैश्विक प्रसार में सबसे बड़ी व्यावहारिक बाधा समन्वित भाषा-रणनीति का अभाव है। विदेश मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, सांस्कृतिक संस्थाएँ और विश्वविद्यालय अपने-अपने स्तर पर हिन्दी से जुड़े कार्यक्रम संचालित करते हैं, किंतु इनके बीच दीर्घकालिक समन्वय और स्पष्ट लक्ष्य निर्धारण का अभाव दिखाई देता है। उदाहरणस्वरूप, विदेशों में हिन्दी शिक्षण के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों, अद्यतन पाठ्यक्रम और डिजिटल संसाधनों की निरंतर आपूर्ति की कोई समग्र नीति स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती है। विश्व हिन्दी सम्मेलन जैसे आयोजनों के पश्चात् भी उनके निष्कर्षों को ठोस नीतिगत रूप देने में निरंतरता की कमी रहती है। परिणामस्वरूप हिन्दी से जुड़े प्रयास कार्यक्रम आधारित (Event-based) बनकर रह जाते हैं, जबकि आवश्यकता रणनीति आधारित (Strategy-based) दृष्टिकोण की है।

8. नीतिगत सुझाव : वैश्विक राजनीति में हिन्दी की भूमिका को सुदृढ़ करने के लिए प्रतीकात्मक प्रयासों से आगे बढ़कर स्पष्ट, दीर्घकालिक और बहु-स्तरीय भाषा-रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। निम्नलिखित नीतिगत सुझाव हिन्दी को भारत की प्रभावी सॉफ्ट पावर के रूप में विकसित करने की दिशा में ठोस आधार प्रदान कर सकते हैं।

8.1 विदेश नीति में भाषा-रणनीति का संस्थानीकरण : भारत की विदेश नीति में अब तक भाषा को सहायक तत्व के रूप में देखा गया है, न कि एक रणनीतिक संसाधन के रूप में। आवश्यकता इस बात की है कि विदेश मंत्रालय के अंतर्गत भाषा एवं सांस्कृतिक कूटनीति प्रकोष्ठ को सुदृढ़ किया जाए। भारतीय राजनयिकों के प्रशिक्षण में हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं को रणनीतिक संप्रेषण कौशल के रूप में सम्मिलित किया जाए। विदेशों में भारतीय दतावासों और सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से हिन्दी में सार्वजनिक कूटनीति (Public Diplomacy) को प्रोत्साहित किया जाए। यह रणनीति हिन्दी को भारत की सभ्यतागत आख्यान (Civilizational Narrative) के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने में सहायक होगी।

8.2 संयुक्त राष्ट्र एवं वैश्विक मंचों पर हिन्दी की भूमिका : हिन्दी को वैश्विक मंचों पर स्थान दिलाना केवल भाषायी सम्मान का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह वैचारिक प्रतिनिधित्व, सांस्कृतिक समानता और भाषायी न्याय (Linguistic Justice) से जुड़ा हुआ विषय है। जिस भाषा को वैश्विक संस्थाओं में स्थान नहीं मिलता, उसके माध्यम से व्यक्त विचार, अनुभव और सभ्यतागत दृष्टिकोण भी हाशिए पर चले जाते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी का प्रश्न केवल भारत का नहीं, बल्कि बहुभाषिक वैश्विक लोकतंत्र का भी प्रश्न है।

(क) संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी : अब तक हुए प्रयास
अब तक संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को आधिकारिक या कार्यकारी भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है, जबकि हिन्दी बोलने वालों की संख्या विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। तथापि, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर अनेक प्रयास किए गए हैं जैसे- संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारतीय प्रतिनिधियों द्वारा हिन्दी में संबोधन किए गए, जिनका तत्पश्चात् आधिकारिक अनुवाद उपलब्ध कराया गया। संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी दिवस के आयोजन के माध्यम से हिन्दी की उपस्थिति को सांस्कृतिक स्तर पर रेखांकित किया गया। भारत द्वारा यह तर्क प्रस्तुत किया जाता रहा है कि हिन्दी बोलने वालों की संख्या संयुक्त राष्ट्र की कुछ आधिकारिक भाषाओं से अधिक है, अतः यह भाषायी प्रतिनिधित्व का न्यायोचित प्रश्न है। किन्तु ये प्रयास अब तक प्रतीकात्मक (Symbolic) स्तर पर ही सीमित रहे हैं और इन्हें संस्थागत स्वरूप नहीं मिल सका है।

(ख) आगे क्या प्रयास किए जाने चाहिए : हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक/कार्यकारी भाषा बनाने हेतु दीर्घकालिक, चरणबद्ध और कूटनीतिक रणनीति अपनाने की आवश्यकता है; जैसे— भारत को वैश्विक दक्षिण (Global South), गिरमिटिया देशों तथा बहुभाषिक समाजों वाले राष्ट्रों के साथ मिलकर संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी के समर्थन हेतु राजनयिक गठबंधन तैयार करना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र में नई भाषा को शामिल करने का एक प्रमुख तर्क वितीय लागत से जुड़ा होता है। भारत को यह स्पष्ट करना चाहिए कि वह प्रारंभिक चरण में अनुवाद, व्याख्या एवं तकनीकी सहायता का आंशिक भार वहन करने को तैयार है। भारत को निरंतर यह अभ्यास करना चाहिए कि वह अपने प्रस्ताव, वक्तव्य और वैचारिक दस्तावेज हिन्दी के साथ-साथ अन्य भाषाओं में प्रस्तुत करे, जिससे हिन्दी की कार्यात्मक उपयोगिता सिद्ध हो। हिन्दी के प्रश्न को केवल राष्ट्रीय आग्रह के रूप में नहीं, बल्कि भाषायी समानता और वैश्विक लोकतंत्र के मद्दे के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

(ग) अन्य वैश्विक मंचों पर हिन्दी : संयुक्त राष्ट्र के अतिरिक्त, हिन्दी के लिए जी20, ब्रिक्स (BRICS) तथा शंघाई सहयोग संगठन (SCO) जैसे मंच अपेक्षाकृत अधिक व्यवहारिक अवसर प्रदान करते हैं। जी20 जैसे मंचों पर भारत द्वारा हिन्दी में वक्तव्य, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और आधिकारिक सामग्री प्रस्तुत करना एक सकारात्मक शुरुआत है। ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंच, जहाँ बहुध्रुवीयता और बहुभाषिकता की भावना प्रबल है, हिन्दी को संवाद-भाषा के रूप में विकसित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं। वैश्विक मंचों पर संस्थागत अनुवाद तंत्र को मजबूती देकर हिन्दी में गंभीर नीति-विमर्शको संभव बनाया जा सकता। तकनीकी प्रगति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) आधारित अनुवाद और डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर हिन्दी को वैश्विक विमर्श में कार्यात्मक रूप से सक्षम बनाया जा सकता है।

8.3 डिजिटल और शैक्षणिक निवेश: डिजिटल युग में भाषा का भविष्य तकनीक और शिक्षा से गहराई से जुड़ा हुआ है। अतः हिन्दी में डिजिटल कंटेंट, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और ओपन एक्सेस अकादमिक संसाधनों में निवेश बढ़ाया जाए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन अनुवाद और भाषा-तकनीक में हिन्दी को प्राथमिकता दी जाए, ताकि वैश्विक डिजिटल स्पेस में उसकी पहुँच बढ़े। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन केंद्रों, चैयर प्रोफेसरशिप और छात्रवृत्तियों को संस्थागत समर्थन दिया जाए। यह निवेश हिन्दी को ज्ञान-उत्पादन और अकादमिक संवाद की भाषा के रूप में सुदृढ़ करेगा।

8.4 प्रवासी समुदायों की भूमिका का सशक्तीकरण: प्रवासी भारतीय समुदाय हिन्दी की वैश्विक सॉफ्ट पावर का सबसे स्वाभाविक और प्रभावी माध्यम है। इसे और सशक्त करने के लिए प्रवासी सांस्कृतिक संगठनों, हिन्दी स्कूलों और साहित्यिक मंचों को नीति-स्तर पर समर्थन दिया जाए। विश्व हिन्दी सम्मेलन, प्रवासी भारतीय दिवस और सांस्कृतिक महोत्सवों को रणनीतिक कूटनीतिक मंच के रूप में विकसित किया जाए। प्रवासी युवाओं के लिए डिजिटल हिन्दी कार्यक्रम और सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजनाएँ प्रारंभ की जाएँ। इससे प्रवासी समुदाय भारत की सांस्कृतिक पहचान के राजदूतों (Ambassadors) के रूप में कार्य कर सकेगा।

8.5 समन्वित एवं समावेशी भाषा-नीति: सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हिन्दी को बढ़ावा देने की नीति समावेशी और बहुभाषिक दृष्टिकोण पर आधारित हो। हिन्दी के वैश्विक प्रसार को अन्य भारतीय भाषाओं के विरोध में नहीं, बल्कि भाषायी विविधता के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया जाए। आंतरिक सहमति और संघीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए भाषा-रणनीति बनाई जाए। यह दृष्टिकोण भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को अधिक विश्वसनीय और स्वीकार्य बनाएगा।

9. निष्कर्ष (Conclusion)- प्रस्तुत शोध-पत्र का केंद्रीय प्रतिपाद्य यह है कि इक्कीसवीं सदी की वैश्विक राजनीति में शक्ति की प्रकृति बहुआयामी हो चुकी है, जहाँ सैन्य और आर्थिक सामर्थ्य के साथ-साथ भाषा,

संस्कृति और वैचारिक प्रभाव भी निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। इस संदर्भ में हिन्दी की भूमिका को एक सांस्कृतिक एवं भाषायी सॉफ्ट पावर के रूप में समझना न केवल प्रासंगिक, बल्कि अपरिहार्य हो गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी केवल भारत की आंतरिक संपर्क भाषा नहीं है, बल्कि वह ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सभ्यतागत निरंतरता की वाहक भाषा के रूप में भारत की वैश्विक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखती है। हिन्दी साहित्य, लोक-परंपरा, सिनेमा, मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा प्रवासी समुदायों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक उपस्थिति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ हुई है, जिससे भारत के प्रति भावनात्मक आकर्षण और वैचारिक स्वीकार्यता को बल मिला है जो सॉफ्ट पावर का मूल आधार है। डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑनलाइन शिक्षा और वैश्विक संचार माध्यमों के विस्तार ने हिन्दी के लिए नई संभावनाएँ सृजित की हैं। डिजिटल पब्लिक स्फियर में हिन्दी की बढ़ती उपस्थिति यह संकेत देती है कि आने वाले समय में हिन्दी वैश्विक विमर्श में अधिक सक्रिय और प्रभावी भूमिका निभा सकती है, विशेषकर यदि शैक्षणिक निवेश, सुदृढ़ अनुवाद तंत्र और प्रवासी समुदाय की भागीदारी को रणनीतिक रूप से जोड़ा जाए।

अंततः, यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि हिन्दी की वैश्विक भूमिका को एक बहुभाषिक और समावेशी वैश्विक व्यवस्था के संदर्भ में ही समझा जाना चाहिए। हिन्दी का प्रसार किसी अन्य भाषा के प्रतिरोध में नहीं, बल्कि भाषायी विविधता, सांस्कृतिक बहुलता और लोकतांत्रिक संवाद के संवर्धन के रूप में होना चाहिए। ऐसी दृष्टि न केवल हिन्दी को वैश्विक स्वीकार्यता दिला सकती है, बल्कि वैश्विक राजनीति में भाषायी न्याय और वैचारिक संतुलन को भी प्रोत्साहित कर सकती है।

संदर्भ सूची (References list)

1. नाई, जोसेफ एस. (2004). सॉफ्ट पावर : विश्व राजनीति में सफलता के साधन. पब्लिकअफेयर्स <https://www.hks.harvard.edu/publications/soft-power-means-success-world-politics>
2. नाई, जोसेफ एस. (2011). द फ्यूचर ऑफ पावर. पब्लिकअफेयर्स <https://www.hks.harvard.edu/publications/future-power>
3. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय. भारत की सांस्कृतिक कूटनीति. <https://mea.gov.in/india-and-the-world.htm>
4. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR). भारत की सांस्कृतिक कूटनीति. <https://www.iccr.gov.in/>
5. संयुक्त राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाएँ. <https://www.un.org/en/about-us/official-languages>
6. भारत सरकार, गृह मंत्रालय. राजभाषा नीति. <https://rajbhasha.gov.in/>
7. कचरू, ब्रज बी. (1986). भाषा, सत्ता और राजनीति World Englishes, Vol. 5(2-3), पृ. 121-140. Wiley-Blackwell. <https://doi.org/10.1111/j.1467-971X.1986.tb00720.x>
8. ग्राम्शी, एंतोनियो. (1971). प्रिजन नोटबुकस. इंटरनेशनल पब्लिशर्स https://www.marxists.org/archive/gramsci/prison_notebooks/
9. थुम्सू, दया किशन. (2013). भारत की सॉफ्ट पावर का संप्रेषण : बुद्ध से बॉलीवुड तक, पैलट्रेव मैकमिलन, लंदन।
10. विश्व हिन्दी सचिवालय, विश्व हिन्दी सम्मेलन से संबंधित दस्तावेज. <https://vishwahindi.com/new/>
11. यूनेस्को, सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिकता. <https://www.unesco.org/en/culture>
12. हैबरमास, जर्गन. (1989). पब्लिक स्फियर का संरचनात्मक रूपांतरण. एमआईटी प्रेस <https://mitpress.mit.edu/9780262581080/>
13. भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय विदेशों में भारतीय सिनेमा. <https://mib.gov.in/>
14. ऑक्सफोर्ड इंटरनेट संस्थान, डिजिटल पब्लिक स्फियर और राजनीति. <https://www.oii.ox.ac.uk/>
15. विश्व बैंक, वैश्विक शासन और सांस्कृतिक प्रभाव. <https://www.worldbank.org/en/topic/governance>
16. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP), दक्षिण-दक्षिण सहयोग. <https://unsouthsouth.org/about/about-unossc/>
17. ब्रिक्स सूचना केंद्र, ब्रिक्स सांस्कृतिक सहयोग. <https://infobrics.org/>
18. G-20 भारत. (2023). वैश्विक सहयोग में संस्कृति की भूमिका. <https://www.g20.org/en/>
19. शंघाई सहयोग संगठन, सांस्कृतिक एवं जन-जन संपर्क. <https://eng.sectscso.org/>
20. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, भारतीय भाषाओं का संवर्धन. <https://www.education.gov.in/>